Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
May 2023
ISSN 2229-3388

आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

डॉ. शेषनाथ मिश्र

संस्कृत विभाग,सत्यवती महाविद्यालय

दि. वि.दिल्ली

आधुनिक संस्कृत साहित्य में गजल, कव्वाली, गीतियाँ, उपन्यास, लघुकथा, जीवनी, आत्मकथा, यात्र वृत्तान्त, हास्य आदि विधाओं में रचनाएँ हुई हैं। छन्दोमुक्त नव्यकाव्य की रचना के प्रति संस्कृत-लेखकों का झुकाव हुआ है। नाटक, व्यंग्य-लेख, ललित-निबन्ध आदि नवीन विधाओं में लेखन हुआ है। आधुनिक संस्कृत-लेखन में गद्य की अपेक्षा पद्य को अधिक प्रश्रय मिला है, जबकि अन्य भारतीय भाषाओं में गद्य को। बीसवीं शदी के उत्तरार्द्ध में गद्य-लेखन के प्रति लेखकों का अधिक ही रुझान रहा है। गद्य में मौलिक उपन्यास और लघुकथा-लेखन की प्रवत्ति निरन्तर बढ़ती गयी।

बीसवीं शदी में गद्य-पद्य दोनों ही क्षेत्रें में नवीन विधाओं को व्यापक रूप से प्रश्रय मिला है। प्राचीन विधाओं पर भी नवीन विषय की रचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। यहाँ विषयानुसार नवीन विधाओं पर विचार किया गया है। आधुनिक संस्कृत-साहित्य में संस्कृत की लगभग सभी प्राचीन तथा नवविकसित विधाओं में सृजन हो रहा है। अधिकांश लघुकाव्यों की रचना पारम्परिक वार्णिक एवं मात्रिक छन्दों में हुई है। समाज के परिप्रेक्ष्य में अनेकों लघुकाव्यों की रचना हुयी है। कवि हेमचन्द्र राय कृत ‘परशुरामचरितम्’, स्वयंप्रकाश शास्त्रीकृत ‘इन्द्रीयक्षीयं काव्यम्’, एस-भि- वेलणकर कृत ‘विष्णुवर्धापनम्’ आदि लघुकाव्य पुराकथाश्रित हैं।

प्रो- अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत ‘पराम्बाशतकम्’ तथा श्री ‘युगलशतकम्, नलिनी शुक्ला कृत ‘भावांजलिः’, श्री भाष्यम्, विजय सारथि कृत ‘मन्दाकिनी’ आदि लघुकथा देवस्तुति परक लघुकाव्य हैं।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत ‘आर्यान्योक्तिशतकम्’ तथा रामकरणशर्मा कृत ‘वीणासंन्ध्या’, ‘शिवशुकीयम्’ आदि अन्योक्तिमय लघुकाव्य हैं।

हर्षदेव माधव की जापान देशे, मिश्रदेशे में भी विश्व-चेतना परिलक्षित होती है। रामकिशोर मिश्र कृत ‘बालचरितम्’, गणेशगंगाराम पेढारकर कृत ‘शिशुलीलालाघवम्’ आदि उल्लेखनीय बालकाव्य हैं।

आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्र के अनेक अर्वाचीन आचार्यों ने काव्य की समस्त विधाओं में काव्य रचनाएँ की हैं। यथा नाटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, रूपक और एकांकी आदि। जिस प्रकार काव्य रचनाकारों ने प्राचीन एवं अर्वाचीन सन्दर्भों का संग्रह करके रचनाएँ की हैं, उसी प्रकार आचार्यों ने इनके स्वरूप का भी निर्धारण किया है। संस्कृत के कतिपय रचनाकारों ने विदेशी काव्य विधाओं यथा हाईकू (विल्वपत्र) काव्य, तान्का काव्य (जापानी विधा), सीजो काव्यविधा (दक्षिण कोरिया) में भी काव्य रचनाएँ की हैं। आचार्यों ने उनके स्वरूप (लक्षण) का भी निर्धारण किया है। इन कवियों में प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र, प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी, श्रीनिवास रथ और प्रो॰ हर्षदेव माधव आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। प्राचीन सन्दर्भों के ग्रहणीय विषयों को उपस्कृत करते हुए इन अर्वाचीन आचार्यों ने काव्य के समस्त भेदों को आधुनिक सन्दर्भों के अनुरूप प्रस्तुत किया है।

आधुनिक रचनाकारों द्वारा काव्य की विभिन्न विधाओं में नवयुगानुरूप रचनाएँ की गयी

शतककाव्य-

प्रो॰ मिश्र के अनुसार शतककाव्य का लक्षण इस प्रकार से दिया गया है-

ध्पद्यानां शतसंख्यात्वाच्छतकाख्यं तदेव हि।।य्

खण्डकाव्य में पद्यों की संख्या सौ होने के कारण उसी को शतककाव्य भी कहते हैं।

विमानकाव्य-

प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र के अनुसार विमानकाव्य का लक्षण इस प्रकार है-

विमानयात्रनुभवैः समृद्धमधुनातनम्।

विमानकाव्यमित्याख्यं साम्प्रतं हि महीयते।।

अर्थात् विमान यात्रओं के अनुभव से भरे पूरे आजकल के काव्य विशेष को विमान काव्य के रूप में प्रतिष्ठित माना गया है।

प्रो॰ रहसविहारी द्विवेदी के मतानुसार-

विमानस्य गतिस्तस्मिन स्थितस्यानुभवस्ततः।

धरावलोकनं चारु विमानाख्यते{भिवर्ण्यते।।

लहरीकाव्य-

प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र के मतानुसार लहरीकाव्य का लक्षण इस प्रकार है-

लहरीकाव्यमप्येतत् खण्डकाव्यं समुच्यते।

प्रतिपाद्यं यदा काव्ये लहरीसन्निभं भवेत्।।

अर्थात् यही खण्डकाव्य लहरीकाव्य भी कहा जाता है बशर्ते उस काव्य का प्रतिपाद्य लहरी के समान हो।

प्रो॰ रहसविहारी द्विवेदी लहरी काव्य का लक्षण देते हुए कहते हैं कि-

देवे देशे निसर्गे वा प्रिये वस्तुनि भक्तिमान्।।

रेडियोरूपक-

बीसवीं सदी के 7वें दशक में संस्कृत के नाटक आकाशवाणी से प्रसारित होने लगे। इन नाटकों का शिल्प हिन्दी-नाटकों जैसा हो गया। नान्दी, प्रस्तावना, भरतवाक्य की पद्धति लुप्त होती गयी। श्रीराम वेलणकर के रेडियो-रूपक उल्लेखनीय हैं। श्री कलानाथशास्त्री ने उत्कृष्ट ध्वनिरूपकों की रचना की। उनका पृथ्वीराजविजय, संवाद और प्रभावान्विति की दृष्टि से श्रेष्ठ रेडियो-रूपक है। रमाकान्त शुक्ल ने कच-देवयानी के प्रेम प्रसंग पर ‘अभिशापम्’ नामक रेडियो-एकांकी 1985 में लिखा था। इसी पौराणिक कथा पर आधारित रेडियो-रूपक ‘देवयानी’ सातवें दशक में रामलिंग शास्त्री ने लिखा। शास्त्री जी ने ‘यामिनी’ नामक एक अन्य रेडियो-रूपक भी लिखा।

वैज्ञानिकों की अंतरिक्ष-यात्र को लेकर भी संस्कृत में एकांकी, रूपक एवं ध्वनि-रूपकों की रचना हुई है। भगवान दास सफाडिया द्वारा हिन्दी में लिखित और प्रेमशंकर शास्त्री द्वारा संस्कृत में अनूदित ‘एकविंशति शताब्दी-द्वाविंशति शताब्दी’ नामक रूपक 1966 में संगमनी पत्रिका में प्रयाग से प्रकाशित हुआ।

प्रो॰ द्विवेदी के अनुसार समस्यापूर्ति काव्य का लक्षण इस प्रकार है-

एकं शब्दं च वाक्यं वा पदं पद्यान्वितं कविः।

पूर्वप्राप्तं समायोज्य समस्यापूर्तिमघड्डते।।

दूतकाव्य-

दूतकाव्य संस्कृत-साहित्य की अद्भुत विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। आधुनिक पात्रें के व नये वातावरण के चित्रण के साथ दूतकाव्यों की रचना निरन्तर हो रही है। भारतीय समाज की वर्तमान स्थितियों का रूपायन करते 'मित्रदूतम्' (1992) तथा 'दूतप्रतिवचनम्' (1989) इच्छाराम द्विवेदी के दूतकाव्य हैं। रामचन्द्र शांडिल्य का कामदूतम् (1988) रेलयात्र के वर्णन के साथ रिपोर्ताज, व्यंग्य और परिहास की शैली का रोचक सम्मिश्रण बन गया है। पं॰ रामावतारशर्मा कृत 'मुद्गरदूतम्', प्रबोधकुमारमिश्र कृत 'स्वप्नदूतम्', 'मलयदूतम्' आदि इसी विषय विधा के काव्य हैं। दूतकाव्य संस्कृत-साहित्य की अद्भुत विधा के रूप में प्रतिष्ठित है।

प्रो॰ राजेन्द्र मिश्र के अनुसार दूतकाव्य का लक्षण इस प्रकार दिया गया है-

दूतकाव्यमिदं प्रोक्तं दौत्यकर्मप्रसघ्ôतः।

सन्देशप्रेषणव्याजैरस्य सन्देशकाव्यता।।

अर्थात् दौत्यकर्म का प्रसंग वर्णित होने पर इसे दूतकाव्य कहा जाता है। यूँ ही सन्देश-सम्प्रेषण के महत्त्ववश इसे सन्देश काव्य भी कहते हैं।

गद्यकाव्य-

प्रो॰ मिश्र का मत है कि आचार्य भरत अभिमत अनियताक्षर अपरनाम वाले चूर्णबन्ध को ही परवर्ती युग में गद्य कहा गया। इसका लक्षण बतलाते हुए वे कहते हैं- गद्य चार प्रकार का कहा है-मुक्तक, वृत्तगन्धि। तदनन्तर उत्कलिकाप्राय तथा अन्तिम चूर्णक है।

मुक्तक-

'**असमस्तपदं मुक्तकम्**' अर्थात् समासहीन पदों वाला गद्य मुक्तक है। उदाहरण प्रो॰ मिश्र की कृति 'इक्षुगन्धा'।

वृत्तगन्धि-

पद्यांशि वृत्तगन्धि' अर्थात् पद्यांशों से युक्त अथवा पद्य जैसा प्रतीत होंने वाला वृत्तगन्धि है।

उदाहरण-इक्षुगन्धा।

उत्कलिकाप्राय-

'**अन्यद्दीर्घसमासाख्यम्** अर्थात् दीर्घ समासों से ओत प्रोत उत्कलिका प्राय है। उदाहरण-मोहन लाल शर्मा (पाण्डेय) कृत पद्मिनी।

गद्यचूर्णक-

'**चूर्णमल्पसमासकम्**' अर्थात् अल्पसमासों से युक्त गद्य चूर्णक है। उदाहरण-प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी प्रणीत विक्रमचरितम्।

निबन्ध-

निबन्ध का लक्षण करते हुए प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी कहते हैं कि- '**विचार विशेषस्य भावविशेषस्य गद्येन बन्धो निबन्धः**'।

विषयप्रधान निबन्ध-

विषय प्रधान निबन्ध में विचार के चिन्तन की प्रधानता होती है। विषय प्रधान निबन्ध विवरणात्मक, वर्णनात्मक और विचारात्मक भेद से तीन हैं।यह दो प्रकार का होता है-भावात्मक निबन्ध और ललित निबन्ध।

ललित-निबन्ध-

अंग्रेजी से प्रेरित ललित-निबन्ध विधा में एक विषय या विचारबिन्दु को लेकर लेखक अपने विचार निबद्ध करता है। इन्हें ललितनिबन्ध, व्यक्तिव्यंजक निबन्ध कहा जाता है। इसमें लेखक के मौलिक, वैयक्तिक विचार मौलिक शैली में निबद्ध होते हैं। किन्तु ललित-निबन्धों का इतिहास पुराना नहीं है। अनेक पत्रिकाओं में उनके संपादकों द्वारा कभी बंगाली-कवि चंडीदास के कृतित्व का परिचय कराने वाला निबन्ध (रिषिकेश भट्टाचार्य का चण्डीदासस्य), कभी कालिदास की कृतियों का तुलनात्मक और विमर्शात्मक विवेचन करने हेतु लिखा गया निबन्ध (अप्पाशास्त्री का धारावाहिक निबन्ध कालिदास), कभी तत्कालीन घटनाओं का आकलन करने वाले पत्रकारिता के लेख लिखे गये, जिन्हें सर्जनात्मक निबन्ध कहा जाता है। हृषिकेश भट्टाचार्य के 'आत्मवयोरुद्गारः' 'विद्योदय' निबन्ध में व्यक्तिगत विचार सुललित शैली में किसी प्रतीक के माध्यम से किसी विचार सूत्र को ध्यान में रखकर अभिव्यक्त किये गये हैं। ये निबन्ध संस्कृत में व्यक्तिव्यंजक निबन्धों के प्रवर्तक माने जाते हैं।

पत्र साहित्य-

इसे भी गद्यसाहित्य की एक विधा मानने की परम्परा कुछ भारतीय और कुछ भारतीयेतर भाषाओं में है। एक लेखक अपनी बात को जब तक आत्मीय या अंतरंग क्षणों में व्यक्त करते हुए भी अभिव्यक्ति कला की दृष्टि से साहित्यिक-सौन्दर्य सहित लिखता है तो वह पत्र-साहित्य विधा के रूप में साहित्य का अंग बन जाता है। आधुनिक काल में बहुत सा पत्रचार पद्य में ही हुआ है। 1835 में मैकाले की शिक्षानीति के विरोध में कलकत्ता की पाठशाला द्वारा एच- एच- विल्सन को लिखा गया पत्र संस्कृत इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। विल्सन का उत्तर भी संस्कृत में था और पाठशाला बंद होने से बच गयी थी। कुछ साहित्यिक पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होते रहते हैं। जैसे दृक् के प्रतिस्पन्द स्तम्भ में। संस्कृत-चन्द्रिका में विद्वानों के समालोचनात्मक पत्र छपते रहते हैं। कुछ पत्रिकाओं में स्थायी स्तम्भ के रूप में पाठकों की प्रतिक्रियाएं प्रकाशित होती हैं। अप्पाशास्त्री ने किसी पाठक की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति को ज्यों-का-त्यों छापने की परम्परा चलाई थी। अमरभारती, सूर्योदय, सुप्रभातम्, सारस्वती-सुषमा आदि पत्रिकाओं में पारस्परिक उत्तर-प्रत्युत्तर और घात-प्रतिघात भी देखने को मिलते हैं।

जीवनवृत्त-

किसी उत्कृष्ट व्यक्तित्व का जीवन-चरित वर्णित करना आधुनिक साहित्य के रूप में वर्गीकृत है। किन्तु संस्कृत-साहित्य में यह किसी पृथक्-काव्य विधा या गद्य विधा के रूप में नहीं है। किसी ऐतिहासिकसमकालीन महान् व्यक्तित्व का रूपायन प्राचीन संस्कृत साहित्य में आख्यायिका के रूप में होता रहा है। जैसे-हर्षचरितम्। प्राचीन साहित्य में महापुरुषों के जीवन-चरित को प्रायः पद्य में ही निबद्ध किया जाता रहा है। कभी-कभी चम्पू में भी, किन्तु विशुद्ध गद्य में बहुत कम देखने को मिलता है।

आधुनिक युग में भी पद्यबद्ध जीवन-चरित लिखे गये हैं। पं॰ शिवकुमार मिश्र (काशी) ने 'यतीन्द्रदेशिकचरितम्' खण्डकाव्य के रूप में लिखा। गद्यबद्ध जीवनियों में कुमार ताताचार्य का 'चण्डमारुताचार्यजीवनचरितम्', गंगाधरशास्त्री की 'राजारामशास्त्रिजीवनचरितम्' तथा 'बालशास्त्रिजीवनचरितम्', श्री शैलताताचार्य का 'रामशास्त्रिचरितम्', के- मार्कण्डेयशर्मा का 'श्री दीक्षितचरितम्' तथा मेधाव्रताचार्य का 'नारायणस्वामिचरितम्' और 'महर्षिविरजानन्दचरितम्' आदि उत्कृष्ट उदाहरण हैं। आत्माराम लाटकर के अनन्तचरितम् में भारतीय शासकों की जीवनियाँ हैं। ब्रिटिश सम्राटों पर भी जीवनियाँ लिखी गयी हैं- जैसे-जी॰ पी॰ पद्मनाभाचार्य का 'जार्जदेव चरितम्'। महात्मा गाँधी पर लगभग 3 महाकाव्यों तथा अनेक काव्यों की सूची गॉधी-शान्तिप्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित है।

कथा- प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी के अनुसार कथा का लक्षण इस प्रकार है-

'जीवनस्यैकदेशनिरूपणपरमाख्यानं कथा'।

प्रबन्धात्मक गद्य का (पूर्वाचार्यों द्वारा) दो प्रकार बताया गया है। उनमें प्रथम है 'कथा' और दूसरा है-'आख्यायिका'। इन दोनों में रमणीया प्रकृतिवाली, रसवत्ता से ओत-प्रोत तथा कल्पना पर आश्रित गद्यकृति को कथा कहते हैं, जो कि दिव्य अथवा मानवीय इतिवृत्तांशों वाली तथा विविध अनुभवों से युक्त होती है। कथा के प्रारम्भ में नमस्कार विधि होती है, खलादि का चरित होता है। तदनन्तर कथाकार का व्यक्तिगत अभिप्राय वर्णित होता है। यह सब पद्यमय ही होता है। न कि गद्य में। कथा में कहीं आर्या का और कहीं वक्त्र एवं अपरवक्त्र छन्दों का प्रयोग होना चाहिए। कविप्रतिभा के शिल्प से मण्डित कवि का आत्मसंस्पर्श (वैयक्तिक

भावनाओं की अभिव्यक्ति) भी कहीं-कही होना चाहिए। कथा के उदाहरणस्वरूप अर्वाचीन ग्रन्थ हैं-जग्गूव कुलभूषण प्रणीत 'जयन्तिका' आदि। इसी प्रकार का वर्णन डॉ॰ राजमंगल यादव कृत 'संस्कृत काव्यशास्त्र की अर्वाचीन परम्परा' में भी मिलता है।

लघुकथा-

लगभग सौ की संख्या में प्रकाशित लघुकथा-संग्रह और प्रायः प्रत्येक पत्र-पत्रिका का आवश्यक अंग बनती जा रही लघुकथा की प्रगति को देखते हुए हम कह सकते है कि यह विधा वर्तमान संस्कृत-गद्य-साहित्य की सर्वप्रिय विधा मानी जाती है। भट्टमथुरानाथशास्त्री, कलानाथशास्त्री, प्रो॰ अभिराज राजेन्द्र मिश्र, डॉ॰ प्रभुनाथ द्विवेदी, डॉ॰ नलिनी शुक्ला, श्रीधरभास्करवर्णेकर, डॉ॰ कृष्णलाल, शिवदत्त शर्मा, डॉ॰ केशवचन्द्रदास, प्रमोदभारतीय, प्रमोदकुमार नायक, रवीन्द्र पण्डा, प्रशस्यमित्र शास्त्री, डॉ॰ नारायण दास, दुर्गादत्तशास्त्री, रामकरणशर्मा, गणेशरामशर्मा, सूर्यनारायणशास्त्री, डॉ॰ बनमाली विश्वाल, नारायणशास्त्रीकांकर आदि अनेकों लेखकों के बहुआयामी कथासंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। ये कथाएँ किसी भी अन्य भारतीय भाषा की कथा के समकक्ष हैं।

संस्मरण-

प्रो॰ राधावल्लभ त्रिपाठी के अनुसार संस्मरण का लक्षण सुन्दर ढंग से किया गया है प्रो॰ त्रिपाठी संस्मरण का लक्षण देते हुए कहते हैं कि-'यथावृत्तस्य स्मृत्या आख्यानं संस्मरणम्।' स्मृति का यथाकृत आख्यान ही संस्मरण होता है।

रेखाचित्र-

प्रो॰ त्रिपाठी रेखाचित्र का लक्षण करते हुए कहते हैं-**'शब्दैर्घटनाया व्यक्तेश्चित्रमिव निर्मितं रेखाचित्रम्।** अर्थात व्यक्ति के चित्र सदृश निर्मित घटना का शब्दशः चित्रण रेखाचित्र होता है।

जीवनचरित-

प्रो॰ त्रिपाठी के मतानुसार जीवनचरित का लक्षण इस प्रकार से है। वे कहते हैं कि-**'कस्यचिन्महापुरुषस्य प्रेरणाप्रदं चरितनिरूपणं जीवनचरितम्।।** किसी महापुरुष के प्रेरणाप्रद जीवनचरित का निरूपण जीवन चरित होता है।

विदेशी छन्द-

उन्नीसवीं शदी में आरम्भ हुयी लोकगीत की परम्परा संस्कृत-काव्य में अनेक दिशाओं में विकसित हुयी और बीसवीं सदी तक अनेक रचनायें प्रकाश में आयीं। अनेक शोकगीत-काव्यों की रचना महात्मा गॉधी के अवसान के प्रसंग में हुई। बद्रीनाथ का 'शोकश्लोकशतकम्' इसी विषय पर आधारित करुणकाव्य है। इसी प्रकार श्री बी॰ एन॰ दातार का एक उल्लेखनीय शोकगीतिकाव्य 'अग्नियात्र' है।

'सानेट' नामक सर्वथा नवीन विधा संस्कृत-सहित्य को देने वाले बीरेन्द्रकुमार (भट्टाचार्य 1917-82) हैं जो बहुसंख्य नाटकों के रचनाकार हैं। इनके सानेटों का एक संग्रह 'कलापिका' (1969) कलकत्ता से प्रकाशित है। श्री भट्टाचार्य ने सानेट का संस्कृत छन्द विधान से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। सानेट में चौदह पंक्तियाँ होती हैं और एक ही छन्द में कविता पूर्ण हो जाती है। यह अंग्रेजी का एक प्रसिद्व छन्द है। सानेट के अतिरिक्त अन्य विदेशी छन्दों को भी कुछ नये कवियों ने अपनाया है। आचार्य हर्षदेव माधव ने हजारों की संख्या में हायकु छन्दों में रचना की है। हायकु की भाँति जापानी छन्द तान्का में भी उन्हा◌ें◌ंने रचना की है। इन्होंने कोरियायी कविता से सीजो नामक छन्द भी लेकर संस्कृत काव्य रचना की है। आचार्य माधव हाइकु की तीन पंक्तियों को त्रिगुणात्मक विश्व की व्यापकता के साथ प्रस्तुत करते हैं और इसे बिल्वपत्र भी कहते हैं।

हाइकु में 17 अक्षर होते हैं। 5-7-5 के क्रम में तीन पंक्तियों में ये अक्षर लिखे जाते हैं। अत्रन्तरे, निष्क्रान्ता सर्वे, पुरा यत्र स्रोतः, तृषेः क्षुब्धे चेतसि आदि कवि के प्रसिद्व काव्यसंग्रह हैं।

हाइकु (बिल्वपत्र) काव्य-

आधुनिक संस्कृत साहित्य के रचनाकारों ने काव्य विधा का बहुत विस्तार किया है। इन्हीं काव्य विधाओं में प्रो॰ हर्षदेव माधव कृत हाइकु भी है। आधुनिक संस्कृत रचनाकारों ने न केवल अपनी प्राचीन एवं अर्वाचीन परम्परा का अनुसरण किया है अपितु उन्होंने इस वैश्वीकरण के युग में वैदेशिक काव्य विधाओं के भी आधारभूत सिद्धान्त को लेकर संस्कृत में रचनाएँ की हैं।

'हाइकु' जापानी काव्य विधा है। हाइकु काव्य की रचना धर्मिता के क्षेत्र में प्रो॰ हर्षदेव माधव अग्रणी कवि हैं। जापान में हाइकु मध्य युग में लिखा जाता रहा है। जापान की जो प्रसिद्ध ''होडक्कि'' विधा है, वही संस्कृत का हाइकु काव्य है। इसमें लघु पंक्तियों में ही सारगर्भित अर्थों का कथन हुआ करता है। इसकी प्रथम एवं तृतीय पंक्ति पंचाक्षरी युक्ता तथा द्वितीय पंक्ति सप्ताक्षरी युक्ता होती है। इसके त्रिदल, बिल्वपत्र तथा सत्तरी इत्यादि अनेक नाम हैं। संस्कृत में इस काव्य की रचना का श्रेय प्रो॰ हर्षदेव माधव को जाता है।

जापान में नये वर्ष के प्रारम्भ में भी काव्य-स्पर्धाओं के द्वारा हाइकु एवं तान्का का सृजन होता रहता है। हाइकु के सन्दर्भ में कहा जाता है कि-

हाइकु काव्य में मात्र 17 अक्षर होते हैं। इसमें तीन चरण होते है। प्रथम एवं तृतीय चरण में पाँच अक्षर होते है तथा द्वितीय चरण में सात अक्षर होते है। अर्थात् 5-7-5 के क्रम से तीन पंक्तियों से लिखा जाता है।

हाइकु की लक्षणिकाएँ-

1- हाइकु में हाइकुकार नहीं बोलता है, हाइकु को बोलने देता है।

2- इसमें घटकतत्त्वों की स्पर्शक्षमता, वस्तुलक्षिता एवं स्फोटकता आवश्यक है।

3- सुभाषितों से हाइकु अलग है, क्योंकि सुभाषितों की भाँति हाइकु का उद्देश्य बोध प्रदान करना नहीं है। पहेलियों की तरह तर्क विहार करना भी हाइकु का प्रण नहीं है।

4- हाइकु में कवि के अस्तित्व का लोप होता है। क्षण या अर्धक्षण में संवेदना जगती है और इमेज तथा व्यंजना की सृष्टि अंकुरित होकर समाप्त हो जाती है।

5- हाइकु अन्य कविताओं से अलग है। वह किसी भी घटना का स्वच्छ दर्पण है। जो कि फिर स्वयं घटना बन जाती है।

हाइकु अत्यन्त लघु किन्तु कवि प्रतिभा का पूरा उन्मेष प्रगट करने वाला साहित्य-प्रकार है। हाइकु काव्य कला का सूक्ष्म शिल्प है। हाइकु सूचन, ध्वनि तथा व्यंजना प्रधान है। यहाँ 'टेलीग्राफिक' भाषा की अनिवार्यता, क्योंकि कम से कम शब्दों में कवि को काव्यत्व सिद्ध करना पड़ता है।

आचार्य हर्षदेव माधव की पहचान संस्कृत साहित्य जगत में चमत्कारी, अद्भुत और नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा वाले कवि के रूप में सुविदित है। भारतीय प्रज्ञा, विश्व साहित्य का सटीक परिचय, बिम्ब विधान का कुशल प्रयोग, तंत्र साधना का दर्शन, समग्र ब्रह्माण्ड की दिव्यादिव्य अभिव्यक्ति का कुशल उद्बोधन इन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। (सन् 2004 ई॰ में प्रकाशित हाइकु, तान्का व सीजो का संग्रह 'रिषेः क्षुब्धे चेतसि' में प्रायः टेलिग्राफिक भाषा को माध्यम बनाया गया है।) प्रो॰ माधव ने हाइकु की लक्षणिकाएँ निम्नानुसार निर्देशित की हैं-

1-चमत्कृति- ऐसी चमत्कृति जिसमें ध्वनि हो।

2-लाघव- ऐसा लाघव, जो शब्द स्वामी ही साध सके। लाघव हो परन्तु वह काव्यार्थ के लिए हानिकारक न हों

3- जिसमें काव्य की विविध वाक्छटाएँ भरी हो तथा कल्पना वैभव हो।

4-उसमें प्रकृति सहित सर्व विषय स्वीकार्य हो।

5-हाइकु में स्वतन्त्रता होेने पर भी किसी भी छन्द के साथ शब्द योजना की जा सकती है।

Anusandhanvallari
Vol 2023, No.1
May 2023
ISSN 2229-3388

हाइकु में 17 अक्षरों की तीन लाइनों में शब्दों की अपरिमित व्य×जकता और उनके चयन व प्रयोग की अद्‌भुत क्षमता के माध्यम से पाठक को उसमें निहित काव्य-जगत् का साक्षात्कार होता है। त्रिगुणात्मक संसार की असंख्य भाव-भूमियों की अवधारणा इन्हीं तीन पंक्तियों में की गयी है। तीन पंक्तियों वाले इस छन्द विशेष (हाइकु) को बिल्वपत्र कहकर संबोधित करने वाले रस सिद्ध कवि हर्षदेव माधव ने 'तृषेः क्षुब्धे चेतसि' पुस्तक के प्रथम छन्द में ही अपनी प्रशस्य व्यंजकता का परिचय देते हुए भगवान् आशुतोष की वन्दना इस प्रकार की है-

त्रिलोचने

समय त्रिंस्तापान्

त्रिजन्मनां मे।

यहाँ तीन का त्रिविध प्रयोग द्रष्टव्य है।)

तान्का काव्य-

हाइकु एक स्वपर्याप्त काव्य कृति के रूप में व्यापक बना। इससे पूर्व राजदरबार के साहित्य विलास के रूप में अस्तित्व में आई हुई, क्रमानुसार 5-7-5-7-7 श्रुति (अक्षर) की 5 पंक्तियों की कृति तान्का नाम से प्रसिद्ध थी। इसकी रचना इस प्रकार से होती थी कि 5-7-5 की एक कृति कोई एक साहित्य रसिक देता था तो उसमें अन्य कोई रसिक जन 7-7 अक्षरों की दो अन्य पंक्तियों जोड़ देता था। इस तरह पादपूर्ति हो जाती थी। पुनः 5-7-5 श्रुति की रचना होती और अन्य 7-7 की दो पंक्तियाँ जुड़ती थीं। इस प्रकार यह खेल आगे चलता रहता था। इसमें शर्त इतनी रहती थी कि आस-पास की दो पंक्तियों तक विषय सम्बन्ध का निर्वाह होना चाहिए। पहली तथा तीसरी कड़ी के बीच इस सम्बन्ध की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी। साथ ही एक ही विषय चलता रहे यह भी इष्ट नहीं माना जाता था।

'तान्का' की गणना ऊर्मिकाव्य में होती है। इसमें मनुष्य की हृदयगत संवेदनाओं को सादी सरल भाषा में अभिव्यक्त किया जाता है। इसमें राष्ट्र-प्रचुरता एवं अलंकार प्रधान शैली के लिए कोई स्थान नहीं है। 31 अक्षरों की स्वरूपगत चुस्ती के कारण यह संभव ही नहीं है। प्रकृति के विविध चित्र प्रस्तुत कर कवि चमत्कृति लाते हैं , तो कभी सीधा भाव कथन भी करते हैं। तान्का के चित्र मात्र चित्र न रहकर कुछ व्यंजना भी सिद्ध करते हैं। तान्का, ताघड्का, तन्का, तंका जैसे विविध नामों से प्रचलित है। इस तान्का को कुछ लोग 'टांका' भी कहते हैं। संस्कृत में हर्षदेव ने 'तान्का' शब्द को स्वीकार किया है।

जापान में 'हाइकु' के अलावा सभी काव्यस्वरूपों को सामूहिक रूप से वाका कहा जाता है। इस प्रकार के वाका में 'तान्का' सबसे लघु स्वरूप माना जाता है। इसमें पाँच पंक्तियाँ एवं 31 अक्षर हैं। लगभग चौथी सदी से तान्का का आरम्भ हुआ एवं सातवीं सदी में उसका स्वरूप दृढ़मूल हुआ। आज भी जापान में नये वर्ष के पर्वोत्सव में तान्का ही पढ़ा जाता है।

डॉ॰ मधु कोठारी तान्का को हाइकु का विस्तारित रूप कहते हैं तथा चित्रकला की भाषा में 31 बिन्दुओं से चित्र उभारने की युक्ति भी कहते हैं। उनके मतानुसार तान्का के तीन लक्षण हैं-1-कल्पना तत्व 2-संघत्तीकरण 3-सूचन। 'तृषेः क्षुब्धे चेतसि' काव्य संग्रह में प्रो॰ माधव ने 86 तान्का काव्य दिए हैं। इन काव्यों में कल्पना, प्रतीक स्वरूप का विशेष ज्ञान एवं प्रकृति का सघन उपयोग मानवीय भावों की संवेदना आदि का अनुभव भी होता है। तान्का का सुन्दर उदाहरण प्रो॰ माधव के अनुसार इस प्रकार है-

समाजोत्सवे

क्रीडाचक्रेयुवतिः।

उत्सव-आमोदे

कुत्र मनः प्रभ्रष्टं?

प्रतिपालयद् प्रियम्।।

यहाँ कवि ने गाँव में आयोजित मेले के एक दृश्य की कल्पना को निरूपित किया है।

सीजोकाव्य-

सीजो काव्य का उद्भव सिल्ला साम्राज्य (668-936) के प्राचीनतम गीत ह्यांग एवं कोर्यो राज्य (918-1392) के गद्य शैली के काव्यों में मिलता है। कोर्यो राज्य की समाप्ति के आस-पास के समय में परम्परागत सीजो काव्य का आधार अधिक मजबूत हुआ। उनकी स्वतंत्र अक्षरमाला 'हांगुल' के 1446 में अस्तित्व में आने के पश्चात् इस काव्य का शैली एवं विषय वस्तु की दृष्टि से विकास हुआ। सीजो काव्य में कोरिया के परम्परागत मूल्यों के साथ राष्ट्रीय विशेषताओं का लालित्य उस प्रदेश के लोगों के जुनून और आकांक्षाओं आदि की गहन एवं व्यापक अभिव्यक्ति हुई है और ये सभी आधुनिक कोरियन फॉक के मध्य बहुत अधिक जीवंत और अभी तक प्रसिद्ध हैं।

6 सदियों के लम्बे समय के दौरान 'सीजो' का स्वरूप विकसित हुआ। इसमें तीन पंक्तियों की एक कड़ी में लगभग 45 वर्ण होते हैं। सीजो काव्य की संख्या शायद कम और अधिक हो सकती है, परन्तु कड़ी तो तीन पंक्तियों की होती है।

यह नियम सभी के लिए एक समान लागू होता है। विभिन्न रचनाकारों के द्वारा सीजो काव्य के सन्दर्भ में इस प्रकार मत प्रकट किया गया है-

डॉ॰ रश्मिकान्त ध्रुव 'सीजो काव्य' के सम्बन्ध में लिखते हुए कहते हैं कि-

'सीजो काव्य' दक्षिण कोरिया की काव्यविधा है। यह काव्यविधा, विशिष्ट, लाघवपूर्ण एवं तीन पंक्तियों में बहुत कुछ कहकर सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करने वाली काव्य विधा है। सीजो के तीन रूप 6 शताब्दी के काल में विकसित हुए थे। मानक सीजो या त्योंग सीजो 3 पंक्तियों की परम्परागत कोरियन कविता है। प्रत्येक पंक्ति 4 वाक्य समूहों से निर्मित है, उनमें से प्रत्येक 3-5 शब्दांश में निर्मित हो जाता है। प्रो॰ जगदीश शुक्ल 'सीजो' का उल्लेख करते हुए लिखते हैं-

'सीजो' (प्योंग)एक कोरियाई लघु काव्यशिल्प है। तनावों के गर्भ से इस चित्रविचित्र काव्य के रूप का विकास हुआ। यह मात्र और गण-गणना में भावों और विचारों को नष्ट नहीं करता है। इस वर्ण वृत्त का आविर्भाव जापानी हाइकु से पूर्व हुआ था। सर्वप्रथम इस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण युक्त तीन स्वरों के अन्तर्गत अपने भाव या विचार को प्रकट किया जाता था, परन्तु इसमें सजीवता, भाव और विचार सन्धियों को स्थान देने के लिए इनकी वर्ण संख्या 42, 43 से 45, 46 तक कर दी गई।

प्रो॰ हर्षदेव माधव ने आधुनिक संस्कृत साहित्य में सीजों की रचना करके अपनी अद्भुत कवि प्रतिभा का परिचय दिया है। प्रो॰ माधव के अनुसार 'सीजो' दक्षिण कोरिया देश का एक काव्य प्रकार है। यह काव्य प्रकार अति प्राचीन है। यह प्रकार स्वरूप की दृष्टि और विषयवस्तु निरूपण दृष्टि से अपूर्व है। इस प्रकार सें कोरिया देश का सौन्दर्य, लोगों का आवेग, राष्ट्र भावना, वीरता परम्परा प्राप्त गौरव सभी को कवियों द्वारा प्रकट किया गया है।

सीजो काव्य का लक्षण-

1- यह तीन पंक्ति युक्त काव्य स्वरूप है।

2- यहाँ 45 संख्या वर्णो को निश्चित किया गया है।

3- प्रत्येक सीजो काव्य अपने आप में सम्पूर्ण है।

4- यहाँ 43 या वर्ण समूह हैं।

5- इस प्रकार में कवि अपने मनोभावों को चमत्कृति रूप से स्फुट करता है।

आचार्य हर्षदेव माधव के सीजो काव्यों में 15,15,15 अक्षरों की तीन पंक्तियाँ देखने को मिलती हैं। आचार्य माधव ने गीत, गजल तथा अद्वांदस तीनों ही काव्य स्वरूपों तथा छन्दों का भी आश्रय लिया है। हाइकु का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

बुद्धदुर्गे शब्स्दत्रवर्षाः

हर्षोन्मत्ताः

अग्निज्वालाः/मंत्रणा।

शौर्यनादाः/रोदनानि

नाशयुक्ता यन्त्रणा।

अस्ति रात्रयां स्नेह शब्दे

वीरतायाः प्रेरणा।।

सीजो काव्य में देशभक्ति, युद्ध तथा देश प्रेम, देश निकाला इत्यादि संवेदनाएँ भी प्रस्तुत हुई हैं। कुछ एक सीजो कवि उच्च कोटि के योद्धा भी थे।

निष्कर्ष- उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट रूप से देखा जैसा सकता है कि आधुनिक संस्कृत साहित्य में किस तरह से नूतन प्रवृत्तियों का विकास किया जाता रहा है । जो निरंतर आज भी गतिमान है ।

सन्दर्भ-ग्रन्थसूची-

1.अभिराजयशोभूषण, प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र

2.अभिनवकाव्यालंकारसूत्र, प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी

3.नाट्यशास्त्र, भरतमुनि

4.ध्वन्यालोचनटीका, अभिनवगुप्त

5.संस्कृत काव्यशास्त्र की अर्वाचीन परंपरा, डॉ राज मंगल यादव

6. संस्कृत वांग्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय

7.आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास, राजकुमार दाधीच

8. आधुनिक संस्कृत साहित्य, मैत्रेयी कुमार

9. आधुनिक संस्कृत साहित्यानुशीलन, रामजी

10. आधुनिक संस्कृत साहित्य श्री, प्रो.राधा वल्लभ त्रिपाठी

11. संस्कृत काव्यशास्त्र का आलोचनात्मक इतिहास, रेवा प्रसाद द्विवेदी

12. आधुनिक संस्कृत साहित्य, दयानन्द भार्गव

13. आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा, केशवराव मुसलगांवकर

14. आधुनिक संस्कृत साहित्य, हीराशुक्ल